्रारान्युधिसप्रेक्ष्यित ॥ ८६॥ र ॥ स्वर्धित ॥ ८६॥ र ॥ स्वर्धित ॥ ८६॥ त्रात्या व ॥ स्वर्धित ॥ देव ॥ तेन्याणं भुजंगाभिहे मपुंखमयोजयत् ॥ ८४॥ तद्षं ज्वर्षित विक्षा विक